रात्रि क्लास 16-6-68. ओमशान्ति :-: अपन को आत्मा समझ भाई2 देखो :-:

त्रिमूर्ति का भी समझाना है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश कौन कराते हैं किसको भी पता नहीं। क्योंकि कल्प का आयु हा लम्बा कर दो है। तो यह बातें सुनकर मुंझते हैं। तुम्हारे लिए नई बात नहीं। तुम कहेंगे 84 का चक्र पूरा हुआ फिर हम देवता बनते हैं दिन-प्रति-दिन सहज होता जाता है। समझते जाते हैं बुद्धि को पाते जाते हैं। 4-5 म्युजियम आद खुल जावेंगे तो कहेंगे यह ब्रह्माकुमारियां क्या है। सभी का ध्यान जावेगा। तुमको यह भी समझाना है जब तक ब्रह्मावंशी न बने तब तक देवता वंशी बन न सके। ब्राह्मण कुल ही पुरुषोत्तम कुल कहा जाता है। बाप पढ़ाते हैं ना। यह तो बच्चों को जरूर बताना है। सभी आत्माओं का बाप वह है। खुद ही टीचर बन बच्चों को पढ़ाते हैं। फिर गुरु भी चाहिए जो सदगति करे। वह भी है। हमारी सदगति होती है। मनुष्य से देवता बनते हैं। तो यह नई बात नहीं है। हमारे कुल के जो नहीं है वह सभी घुस पड़ते हैं। कोई कुछ भी नहीं समझते। तब बाप कहते हैं मैं जो हूं जैसा हूं कोई बिरले ही जानते हैं। यह नई चीज़ है। बच्चे जानते हैं बुद्धि को पानी ही है। हमको पैगाम देना है है। तुम हो पैगम्बर। घर घर में बड़े2 आदमियों पास भी जाते हो ना। क्योंकि बड़ों की बात मनुष्यों को अच्छी लगती है। यह जो चक्र है त्रिमूर्ति के नीचे इस पर तुम बहुत ही अच्छी रीतसमझा सकते हो। बाप आकर पवित्र फैमली प्लानिंग बना रहे हैं। इतने पवित्र बनेंगे जो सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी सतयुग त्रेता में आ सके। इतने ही बनने हैं। बाप कहते रहते हैं बच्चे म्युजियम खोलो। प्रोजेक्टर से तो थोड़ा समझेंगे। प्रदर्शनी सब से अच्छी है। जो देखेंगे। दूसरे को ले आवेंगे। ऐसा म्युजियम तो दुनिया में होता ही नहीं। यह ज्ञान बाप ही आकर देते हैं। तो नया ज्ञान कहेंगे ना। देने वाला भी है नया। लेने वाले जो कल्प पहले वाले हैं वही आते रहेंगे। यह है पवित्र प्रवृति मार्ग। बहुत पॉयन्ट्स हैं जो समझने के लिए कम से कम सात रोज़ जरूर चाहिए। तुम्हारी तो पंचायती ही नहीं थी। समझते थे खुदाई खिजमतगार हैं। सभी मान देते थे। दुश्मन नहीं थे कोई के।

यह भी समझाया है अपन को आत्मा समझो* तो बेहद के बाप वरसा जरूर याद आवेगा। बाबा हमको राजयोग सिखलाते हैं। बाबा भी है शिक्षक भी है। ऐसे नहीं कि अन्तर्यामी है। अन्दर के बातों को जानते हैं। भक्ति को कहा जाता है घोर-अंधियारा। ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अंधेर विनाश। तो जरूर ज्ञान देने वाले होंगे। तुमको अभी नालेज मिलती है यह बनने लिए। सारी वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी तुम्हारी बुद्धि में है। अगर कहते हैं मैं बाबा को याद करने में मुंझता हूं, तो यह तुम्हारी तकदीर। जनावर को भी मां बाप याद पड़ते हैं। हद के बाप को याद करते हो, बेहद के बाप को याद क्यों नहीं कर सकते हो। यह तो बन्दर है ना। बाप बच्चों को आफिस तो देंगे ना। अपने लिए बच्चे राजधानी स्थापन कर रहे हैं* गुप्त वेष में। तुम हो अन नोन वट वेरी वेल नोन। अभी तुमको कोई नहीं जानते हैं। फिर वन्देमातरम आद कह कितना पूजा करते हैं। अम्बा पर कितना मेला लगता है। जीते जी मरने का पुरुषार्थ बहुत मीठा है। मर कर अमर पद पाते हो। तो मीठा है ना। तुम अमरलोक के मालिक थे फिर बनते हो। बाप कहते हैं बच्चों को देख2 मन हर्षित होता है। हमारे सामने सभीनूरे स्टन बैठे हैं। गायन भी है नजर से निहाल स्वामी* किंदा सदगुरु। गुरु नहीं। एक दो की नजर मिलती है और तुम सतोप्रधान बन जाते हो। और क्या चाहिए। बाप कहते हैं मैं बाप हूं। स्वदर्शनचक्रधारी भी हूं। मैं स्व जो परमात्मा हूं मुझ में सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान है। तो मैं स्वदर्शनचक्रधारी बना ना। कौन बना? परम आत्मा। तुम आत्मायें पतित हो। अभी तुमको आप समान बनाना है। स्वदर्शनचक्रधारी है आत्मा। तुम भी स्वदर्शनचक्रधारी बनते हो। यह ज्ञान की संस्कार ले जाते हैं। फिर आते हो पार्ट बजाने तो ज्ञान के संस्कार ले जाते हो। ड्रामा पूरा हो जाता। फिर सुख की प्रारब्ध शुरु हो जाती है।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुड नाईट और नमस्ते।